मिडास

यूनान की ऐतिहासिक लोककथा



आलोक श्रीवास्तव
आदित्य श्रीवास्तव
आशा श्रीवास्तव

मिडास

यूनान की ऐतिहासिक लोककथा

आलोक श्रीवास्तव

आदित्य श्रीवास्तव

आशा श्रीवास्तव

प्रथम संस्करण: 2018

मिडास

मिडास

ईसा से लगभग दो हजार साल पहले की बात है, फ्रिजिया[1] में कोई राजा नहीं था, और वहां रहने वाली जनता को लगा कि उनका कोई राजा होना चाहिए, इसलिए इस बारे में उन्होंने आपस में काफी विचार-विमर्श किया परन्तु जब वे किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाए तो उन्होंने तय किया कि अपने राजा के चुनाव के लिए वे ख़्रेसमोई[2] के पास जायेंगे और उसकी राय के अनुसार बताये गये व्यक्ति को अपना राजा बना देंगे।

---

[1] जिसमें अब टर्की है।

[2] ख़्रेसमोई(χρησμοί)—प्राचीन यूनान में देवताओं की मर्जी और भविष्य की जानकारी का पता लगाने के लिए लोग जिस व्यक्ति के पास सलाह लेने के लिए जाया करते थे, उसे 'ख़्रेसमोई' कहा जाता था।

ख्रेसमोई के पास जाकर उन्होंने उससे कहा, "हमें आपकी मदद चाहिए। हमारी मदद कीजिए!"

"अपनी बात साफ़-साफ़ कहो, और यह बताओ कि तुम लोगों की समस्या क्या है?"

"बात यह है कि हम लोग चाहते हैं कि हमारा कोई राजा हो ताकि जरूरत पड़ने पर हम अपनी समस्याओं को निपटारे के लिए उसके पास ले जा सके और वक्त पड़ने पर वह हमारी रक्षा करे। लेकिन हम यह तय नहीं कर पा रहे हैं कि हममें से कौन ऐसा है जो हमारा राजा बनने के योग्य है। इसलिए आप हमारी मदद करें और यह तय करें कि कौन हमारा राजा बनेगा।"

उन लोगों की बात सुनकर ख्रेसमोई ने कुछ देर के लिए अपनी आँखों को बंदकर विचार किया और फिर आँखें खोलते हुए बोला, "देवताओं ने मुझसे कहा है कि कल सुबह जो पहला व्यक्ति पहिया-गाड़ी लेकर मुख्य द्वार से फ्रिजिया में प्रवेश करेगा वही तुम्हारा राजा होगा।"

इसके बाद वे लोग वहां से चले गये, और मुख्य द्वार पर खड़े होकर अपने भावी राजा के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

दिन निकलने पर, उन्हें मुख्य द्वार पर लकड़ी की बनी एक भारी छकड़ा गाड़ी बड़ी ही सुस्ती के साथ धीरे-धीरे आती हुयी दिखाई

दी, इस पहिया गाड़ी को एक किसान गोर्डीअस, अपनी पत्नी सिबली और लड़के मिडास की मदद से, धकेलते हुए ला रहा था।

किसान की पत्नी और लड़के ने उससे कहा, "हम लोगों से अब और चला नहीं जाता है, हम बुरी तरह से थक गये हैं क्यों न थोड़ी देर रुककर हम विश्राम कर लें।"

पत्नी और लड़के की बात सुनकर किसान ने उनका मनोबल बढ़ाते हुए कहा, "बस थोड़ी देर की ही बात है, हम मुख्य द्वार पर पहुँचने ही वाले हैं। वहां पहुँच कर हम सुस्ता लेंगे। चलो अब जोर लगाओ और जल्दी चलो।"

उस समय किसान अपनी छकड़ा-गाड़ी में अपने छोटे से खेत में पैदा हुयी फसल और अंगूर के बगीचे में पैदा हुए अंगूरों को लादकर बाजार में बेचने के लिए जा रहा था, इसके अलावा उसके पास बेचने के लिए एक चिड़िया, एक या दो बकरियां, और बैंगनी-लाल शराब भी थी।

जैसे ही किसान गोर्डीअस अपनी छकड़ा गाड़ी के साथ मुख्य द्वार पर पहुंचा तो वहां खड़ी उत्सुक जनता उसे, उसकी पत्नी और उसके लड़के को देखकर ख़ुशी से चिल्ला पड़ी, "हमारा राजा आ गया, हमारा राजा आ गया!"

"हम अपने नये राजा का स्वागत करते हैं, हम अपने नये राजा का स्वागत करते हैं।" यह उद्घोष करते हुए जनता ने गोर्डीअस के

करीब आकर उसे घेर लिया और जयकार करते हुए बोली, “फ्रिजिया के राजा की जय हो! फ्रिजिया की रानी की जय हो! फ्रिजिया के राजकुमार की जय हो।”

लोगों को इस प्रकार से उद्घोष करते देख, किसान गोर्डीअस और उसका पूरा परिवार आश्चर्य चकित हो गया और इर्दगिर्द खड़े लोगों को हैरत के भाव से देखने लगा, क्योंकि वहां मौजूद सभी लोग उन लोगों को फ्रिजिया के राजा, रानी और राजकुमार के रूप में संबोधित कर रहे थे।

गोर्डीअस ने भीड़ को शांत होने के लिए कहा और जब भीड़ ने अपना जयघोष बंद किया तब उसने पूछा, “यह सब क्या है? आप लोग मुझे अपना राजा क्यों संबोधित कर रहे हैं?”

गोर्डीअस की बात सुनकर भीड़ से निकलकर एक वृद्ध व्यक्ति सामने आया और उसने उसे ख्रेसमोई की भविष्यवाणी के बारे में बताया।

ख्रेसमोई की भविष्यवाणी की बात सुनकर गोर्डीअस ने ऊपर आसमान की तरफ देखते हुए धीमी आवाज में बुदबुदाकर कहा, “हे ईश्वर नीच कुल में जन्में मुझ जैसे एक मामूली किसान पर तूने वाकई बहुत बड़ी कृपा की है, कहाँ कल तक तो मुझे और मेरे परिवार के लोगों को खाने के लाले थे और कहां आज तूने मुझे राजा बना दिया है, वाकई तुमने मुझे एक अद्भुत तोहफा दिया है,

एक ऐसा तोहफा जिसकी कल्पना मैं सपने में भी नहीं कर सकता था। हे ईश्वर, तेरी इस अनुकम्पा के लिए तेरा लाख-लाख धन्यवाद।”

इस प्रकार ईश्वर को धन्यवाद देने के बाद गोर्डीअस भीड़ के साथ उस ख्रेसमोई के पास गया जिसकी भविष्यवाणी से आज वह फ्रिजिया का राजा बना था। उसने ख्रेसमोई से अपना आभार व्यक्त किया और भेंट के रूप में अपनी छकड़ा-गाड़ी को इसके सभी सामानों सहित समीप ही एक स्थान पर अच्छी तरह से बाँध दिया और फिर ख्रेसमोई से विदा लेकर फ्रिजिया के राजा के रूप में जनता के साथ वापस लौट गया।

उसने अपने रहने के लिए महल बनवाया, सेना बनायी और वह सारी चीजें जुटाई जो किसी राज्य और राज्य के सुचारु संचालन, के लिए जरूरी होती हैं। समय बीतने के साथ ही उसने अपने साम्राज्य का विस्तार किया और इतना विस्तार किया कि वह समूचे पश्चिमी एशिया का राजा बन गया।

गोर्डीअस की मौत के बाद मिडास ने फ्रिजिया के तख्त और ताज को सँभाला। सिंहासन पर बैठते ही तख्त और ताज की ताकत उस पर कुछ ज्यादा ही बुरी तरह से हावी हो गयी। उस दिन, जब उसके किसान पिता की पहिया गाड़ी ने फ्रिजिया के मुख्य द्वार पर प्रवेश किया था तब वहां मौजूद भीड़ द्वारा दिए गये

सम्मान और अभिनंदन को देखकर, उसने सीख लिया था कि शक्ति का क्या महत्व होता है, और इसलिए, अपने लड़कपन के बाद से उसे सत्ता पाने की चाहत हमेशा बनी रही, वह ज्यादा और भी ज्यादा शक्ति पाना चाहता था, वह अपनी पूर्ण सत्ता स्थापित करना चाहता था। और उसके पिता गोर्डीअस ने भी उसे यही सिखाया था कि सोने से वह कुछ भी खरीद सकता था, सोने से वह ताकत खरीद सकता था, सत्ता हासिल कर सकता था, लोगों के ईमान खरीद सकता था, दुनिया में कोई भी ऐसी चीज नहीं थी जिसे सोने से नहीं खरीदा जा सकता था। ये ख्याल मिडास के दिमाग में अच्छी तरह से बैठ गये थे। इसलिए सत्ता संभालने के बाद मिडास का ध्यान अपनी जनता, जिसने पहले उसके पिता गोर्डीअस और अब गोर्डीअस की मौत के बाद उसे अपना राजा बनाया था, की देखरेख करने की बजाय इस बात पर था कि वह ज्यादा से ज्यादा सोना इकट्ठा करे। सोने को इकट्ठा करने के लिए उसने अपनी जनता पर लगाये गये कर[3] को बढ़ा दिया। साल दर साल समय बीतने के साथ ही सोना इकट्ठा करने की मिडास की चाहत भी बढ़ती चली गयी और जहां पहले उसने जनता पर लगाये गये प्रत्यक्ष-कर[4] की राशि को ही बढ़ाया था अब शासन

[3] कर—टैक्स

[4] प्रत्यक्ष-कर—वह टैक्स जो शासनतंत्र के सुचारु रूप से संचालन के लिए जरूरी होता है। इसे किसी व्यक्ति की होने वाली आय या कमाई पर लगाकर वसूला जाता है।

के कुछ वर्षों बाद उसने अपनी जनता पर अप्रत्यक्ष-कर[5] भी लगा दिए और फिर जनता से वसूल किये जाने वाले कर की यह राशि हर साल बढ़ती चली गयी। उसकी यह चाहत इस हद तक बढ़ गयी कि वह चाहता था कि उससे पहले इस दुनिया में कोई भी ऐसा राजा न हुआ हो अथवा भविष्य में कोई ऐसा राजा न हो जिसके पास उससे ज्यादा सोना हो।

सोने को इकट्ठा करने की मिडास की यह हवस ओलम्पस[6] में रह रहे देवताओं से छिपी न थी। एक दिन देवताओं की सभा में

---

[5]अप्रत्यक्ष-कर—यह एक गैर जरूरी टैक्स होता है इसका शासनतन्त्र के संचालन से कोई लेना-देना नहीं होता है, इसका मुख्य उद्देश्य राजकोष को भरना तथा महंगाई और भ्रष्टाचार को बढ़ाना होता है। इसे किसी व्यक्ति के व्यय अथवा खर्चों पर लगाकर अप्रत्यक्ष तरीके से वसूला जाता है। किसी व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल की जानी वाली वस्तुओं और सेवाओं पर यह लगाया जाता है। चूंकि यह वस्तुओं और सेवाओं पर लगाया जाता है इसलिए एक गरीब आदमी और एक धनवान आदमी दोनों से ही इसके द्वारा वसूली जाने वाली रकम एक बराबर होती है अतः जब एक धनवान आदमी किसी वस्तु को खरीदता है तो इसके कारण उस वस्तु की कीमत में होने वाली वृद्धि का भले ही उस धनवान आदमी की जेब पर कोई असर न पड़े परन्तु जब एक गरीब आदमी उसी वस्तु को खरीदता है तो यह उस गरीब आदमी की जेब पर काफी बुरी तरह से असर डालता है। इस नजरिये से देखा जाए तो इस अप्रत्यक्ष-कर का एक प्रमुख उद्देश्य अमीर और गरीब के बीच के फासले को बढ़ाना भी है। जहाँ प्रत्यक्ष-कर की वसूली सिर्फ उन्हीं लोगों से की जाती है जिनकी आय या कमाई होती है वहीं दूसरी ओर अप्रत्यक्ष-कर की वसूली हर एक आम व्यक्ति, चाहे वह कमाए अथवा न कमाए, से की जाती है। अप्रत्यक्ष होने के कारण वस्तुओं और सेवाओं पर इसे किसी भी हद तक लगाया जा सकता है।

[6] ओलम्पस (Όλυμπος), यूनान का सबसे ऊँचा पर्वत है। यूनानी मान्यताओं के अनुसार पुरातन काल में यह ओलम्पिया के बारह देवताओं का निवास स्थान रहा है,

ज्यूस[7] जब मिडास की चर्चा कर रहे थे, तो बैशस[8] और सालिनस[9] भी ज्यूस की सभा में उपस्थित थे और ज्यूस की बातें सुन रहे थे। ज्यूस सभा में उपस्थित देवताओं से कह रहे थे, "देखो, पिछले पांच दशकों से यह मिडास, फ्रिजिया का राजा बना बैठा है, और जब से यह राजा बना है तब से इसने सोना इकट्ठा करने के सिवाय और कोई दूसरा काम नहीं किया है। यह अपने बचपन के गरीबी के उन दिनों को भूल ही गया है जब इसे दो जून की रोटी भी नसीब नहीं होती थी। अरे, सोने को इकट्ठा करने के इसके पागलपन से तो अब जनता भी त्राहि-त्राहि करने लगी है। यहाँ पर किसानों के लड़के न जाने कितने ही ऐसे दिन बिताते हैं जब चट्टानी फ्रिजिया की ऊंची जमीनों पर दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद भी वे भूखे पेट ही अपने बिस्तरों पर सोने के लिए मजबूर होते हैं।"

ये बारह देवता हैं ज्यूस (Ζεύς), हेरा (Ἥρα), पोसाईडन(Ποσειδῶν), डिमीटर (Δημήτηρ), एथेना (Ἀθηνᾶ), अपोलो (Ἀπόλλων), आर्स (Ἄρης), आर्टमिस(Ἄρτεμις), आफ्रेडाईट (Ἀφροδίτη), हीफिस्टस (Ἥφαιστος), हेर्मेस(Ἑρμῆς), बैशेस(Βάκχος) अथवा हेस्टिया (Ἑστία)

[7] ज्यूस(Ζεύς) —इन्हें सभी देवताओं और मनुष्यों का पिता कहा जाता है। यूनानी मान्यताओं में इन्हें आकाश और बिजली का देवता माना जाता है।

[8] बैशस(Βάκχος) —यूनानी मान्यताओं में इन्हें अंगूर की फसल और हर्षोन्माद का देवता माना जाता है।

[9] सालिनस(Σειληνός)—यूनानी मान्यताओं के अनुसार यह वनदेवता हैं, जो युवा देवता बैशस के संरक्षक और शिक्षक हैं।

सभा समाप्त होने के बाद, सभा से निकलते समय बैशस ने सालिनस से कहा, “देवताओं की सभा में एक मामूली राजा की चर्चा होना, और वह भी सोने को इकट्ठा करने के लिए उसके पागलपन को लेकर, वाकई यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है। क्या किसी राजा को यह बात शोभा देती है कि वह सोने को इकट्ठा करने के लिए अपनी जनता को इस हद तक परेशान करे कि उसकी जनता त्राहि-त्राहि करने लगे? आप इस बारे में क्या सोचते हैं?”

इस पर सालिनस ने बात को टालते हुए बैशस से कहा, “फिलहाल तुम अभी यहाँ से जाओ, मुझे एक बेहद जरूरी काम याद आ गया है।”

बैशस के जाने के बाद सालिनस, अपने गधे पर सवार हुए और अपने दो हत्थे वाले प्याले से शराब पीते हुए उन्होंने अपने गधे को मिडास के राज्य की तरफ हांक दिया।

उस दिन मिडास अपने दरबारियों के साथ बैठ कर इस बारे में चर्चा कर रहा था कि उसके राजकोष में सोने को और किस तरह से ज्यादा से ज्यादा इकट्ठा किया जाए। मिडास के एक दरबारी ने कहा, “महाराज, हम जनता से प्रत्यक्ष-कर तो सीमित मात्रा में ही ले सकते हैं परन्तु हम जितना चाहें उतना अप्रत्यक्ष-कर जनता पर थोप सकते हैं, क्योंकि यह कई चरणों में वसूली जाने वाली जटिल

प्रक्रिया है जनता यह कभी नहीं समझ सकती है कि हम उससे किस तरह से और कितना कर वसूल रहे हैं और अप्रत्यक्ष होने की वजह से इसकी वसूली आसान है और कोई हमारे खिलाफ कुछ बोल भी नहीं सकता है। सोने को इकट्ठा करने के लिए हमें अपने अप्रत्यक्ष-कर का दायरा और ज्यादा बढ़ाना होगा और यह देखना होगा कि हम किन-किन चीजों पर किस तरह से अप्रत्यक्ष-कर लगा सकते हैं।"

तो दूसरे दरबारी ने अपनी बात कहते हुए कहा, "महाराज, बुरा मत मानिएगा और मेरी इस गुस्ताखी के लिए मुझे माफ़ कीजिएगा। मगर सच्चाई यह है कि हमें अपने खर्चों, राज्य की सुरक्षा, और आपात स्थिति से निपटने के लिए जितना भी धन चाहिए उसकी भरपाई प्रत्यक्ष-कर की वसूली से ही पूरी हो जाती है। और जहाँ तक सोने को इकट्ठा कर राजकोष को भरने की आपकी हसरत का प्रश्न है तो इसके लिए आपने सत्ता संभालने के कुछ वर्षों बाद ही अपनी जनता पर अप्रत्यक्ष-कर लगा दिया था और जब से आपने इसे लागू किया है तब से इसमें लगातार बढ़ोत्तरी ही की गयी है, सोने को जमा करने के लिए हर साल हम लोग नये राजकोष बनाते हैं और उन राजकोषों के भरने के बाद फिर एक नया राजकोष बनाते हैं, परन्तु कभी भी हम जमा किये गये इस सोने का इस्तेमाल अपने निजी उपयोगों को छोड़कर कहीं और नहीं करते हैं यहाँ तक कि जब भी राज्य में कोई आपदा

आती है तो उस समय भी राजकोष में जमा किये गये सोने का इस्तेमाल नहीं किया जाता है और जनता के बीच यह मुनादी करा दी जाती है कि आई हुयी आपदा से निपटने के लिए वह खुले दिल से राजकोष के लिए दान करे। महाराज, कर चुकाने वाली जनता के पास खुद के सीमित संसाधन[10] ही होते हैं, अप्रत्यक्ष-कर के बढ़ाये जाने से जनता के संसाधन नहीं बढ़ते, वैसे भी राज्य की आबादी बढ़ने के कारण पहले की तुलना में अब हमें कहीं ज्यादा प्रत्यक्ष-कर मिलता है इसलिए मेरी राय में अब हमें अप्रत्यक्ष-कर की वसूली बंद कर के जनता को पूरी तरह से इससे मुक्ति दे देनी चाहिये ताकि वह अपने धन का अपने लिए खुल कर मनचाहा इस्तेमाल कर सके और खुशहाल जीवन बिता सके। महाराज, हम जिस प्रकार से अप्रत्यक्ष-कर की वसूली करके राजकोषों को सोने से भर रहे हैं उसका दूरगामी परिणाम अच्छा नहीं होगा।"

"पहले तो तुम आज में जीना सीखो, और यह दूरगामी परिणाम जैसी चीजें जनता को सुनाने के लिए होती हैं न कि राजा को सुनाने के लिए। तुम हमारे दरबारी हो तुम्हें हमारे हितों और खुशियों के बारे में सोचना चाहिए न कि जनता के, हमें जनता से कोई सरोकार नहीं है हम तो सिर्फ यह चाहते हैं कि हमारे राजकोष में सोना

---

[10] संसाधन—वह साधन या स्त्रोत जिसके जरिये कोई आदमी अपनी आजीविका कमाता है।

इकट्ठा होता जाए; और यदि एक क्षण के लिए यह मान भी लिया जाए कि हमारे द्वारा की गयी उगाही के दूरगामी परिणाम अच्छे नहीं होंगे तो भी उससे हमें क्या फर्क पड़ता है, तुम्हारे द्वारा कथित दूरगामी परिणाम को आने वाली पीढ़ी झेलेगी हम नहीं। हम तो अपने समय में आराम से जीएंगे और मजे से अपनी जिन्दगी गुजारेंगे अगर आने वाली पीढ़ी की जिन्दगी नाश होती है, उसे अवांछनीय मुश्किलों का सामना करना पड़ता है तो यह उसकी खराब किस्मत का दोष है। इससे ज्यादा इस बारे में अब हम न ही कुछ कहेंगे और न ही कुछ सुनेंगे। अगर तुम कर की और ज्यादा वसूली के बारे में सलाह नहीं दे सकते हो तो अपना मुंह बंद करके चुपचाप बैठो और अपनी दूरदर्शिता को अपने पास ही रखो।" अपनी सफेद लम्बी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए मिडास ने, उस दरबारी को फटकारते हुए, गुस्से से कहा।

जनता पर नये-नये तरीके से और अधिक अप्रत्यक्ष कर लगाने की अपनी योजनाओं के बारे में मिडास अभी अपने मंत्रियों के साथ बैठकर सोच-विचार कर ही रहा था कि द्वारपाल ने मिडास से आकर कहा, "महाराज, कुछ किसान अपनी समस्या लेकर आये हैं और वे आपसे मिलना चाहते हैं।"

"उनसे कह दो कि उनकी समस्याओं को सुनने के लिए अभी हमारे पास समय नहीं है, हम एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर विचार-विमर्श कर रहे हैं।"

“जी महाराज।” यह कहकर द्वारपाल वहां से चला गया।

जब द्वारपाल ने किसानों को बताया कि महाराज मिडास अभी बहुत ही व्यस्त हैं और उनके पास इतना समय नहीं है कि वह उन किसानों की समस्याएं सुन सकें तो किसान भड़क गये और महल के द्वार पर ही शोर-शराबा करने लगे और कहने लगे, “हमें महाराज से अभी मिलना है, हम किसी तरह के बहाने को नहीं सुनेंगे तुम जाओ और महाराज से कहो कि हमारा उनसे मिलना बेहद जरूरी है। हमने मिडास को अपना राजा इसलिए बनाया है ताकि जरूरत पड़ने पर हम अपनी समस्याएं लेकर उसके पास आ सकें।”

किसानों की यह दलील सुनकर द्वारपाल वापस मिडास के पास आया और बोला, “महाराज, किसान बहुत ही ज्यादा उत्तेजित हो गये हैं और वे आपसे मिलने की जिद पर अड़े हुए हैं।”

“अच्छा, यदि ऐसी बात है तो ठीक है, तुम उन्हें अंदर भेज दो।”

मिडास ने देखा वे किसान एक स्लेटी रंग के बूढ़े गधे की पीठ पर सवार नशे में धुत लहराते हुए, आइवी की लता का मुकुट पहने हुए, मदमस्त बूढ़े—जो गंजा था, जिसके होंठ मोटे थे और जिसकी नाक गोल-मटोल थी और जिसने हाथ में शराब पीने के लिए दो हत्थों वाला एक प्याला पकड़ रखा था—को लेकर उसके दरबार में आये थे।

किसानों ने अपने सिरों को झुकाकर मिडास का अभिवादन किया और फिर वे कुछ कहते इससे पहले ही मिडास के एक दरबारी ने गधे पर सवार बूढ़े की तरफ इशारा करते हुए पूछा, "यह कौन है? और यह तुम लोगों को कहां पर मिला?"

"हमें नहीं पता है कि यह कौन है, यह नशे में धुत होकर अपने गधे को हमारे खेतों में लगी फसलों पर हांक रहा था। जब हमने इसे रोकने की कोशिश की तो यह हमसे ही लड़ने लगा। इसने हमारी फसलों को बहुत नुकसान पहुँचाया है इसलिए हम चाहते हैं, महाराज कि आप इसे दण्डित करें।" हाथ जोड़कर विनती करते हुए किसानों ने मिडास से कहा।

मिडास ने अपने पिता गोर्डीअस से वनदेवता सालिनस के बारे में सुन रखा था। नशे में धुत और गधे पर सवार उस बूढ़े को देखते ही मिडास पहचान गया कि वह बूढ़ा कोई और नहीं बल्कि वनदेवता सालिनस थे, जो युवा देवता बैशस के संरक्षक और शिक्षक थे, इसलिए उसने किसानों को डांटते हुए कहा, "तुम लोग यहाँ से चुपचाप चले जाओ, और अब अगर तुमने इनके खिलाफ एक और शब्द भी कहा तो मैं तुम लोगों को कारागार में बंद कर दूंगा।"

मिडास की फटकार सुनकर किसान उदास मन से वापस चले गये।

और फिर अपने स्थान से उठकर मिडास ने सालिनस का स्वागत किया और पूरे सम्मान के साथ अपने समीप एक उचित स्थान पर बैठने के लिए उन्हें जगह दी। और उनकी खातिरदारी के लिए सेवकों को नियुक्त करने के बाद आदेश दिया कि वे सालिनस को शाही मेहमान-खाने में ले जाएँ। मिडास ने पूरे दस दिन और दस रातों तक सालिनस के सम्मान में शाही दावत का आयोजन किया।

ग्यारहवें दिन के अपराह्न के समय जब युवा देवता बैशस अपने इस शिक्षक और संरक्षक, सालिनस को तलाशते हुए मिडास के यहाँ फ्रिजिया में पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि सालिनस नशे में धुत होकर मिडास के महल के बगीचे में पड़े थे। सालिनस को देखते ही बैशस उनके पास गये और उन्हें होश में लाने की कोशिश करते हुए वह बोले, “आपको कुछ पता भी है, पिछले दस दिनों से आप गायब हैं, आपको लेकर मैं कितना चिन्तित था इसका कोई अंदाजा भी है आपको?”

बैशस की बात सुनकर अपनी आँखों को खोलते हुए सालिनस ने कहा, “ओह, तो यह तुम हो बैशस! तुम बेकार ही मुझे लेकर चिंतित हो रहे थे, मैं यहाँ बहुत मजे में हूँ। कुछ किसानों से मेरा विवाद हो गया था और वे मुझे पकड़ कर यहाँ ले आये और वे किसान चाहते थे कि उनके खेतों में मैंने जो उत्पात मचाया था उसके लिए मुझे दंडित किया जाये लेकिन फिर...”

अभी सालिनस और बैशस आपस में बात कर रहे थे कि तभी वहां मिडास आ पहुंचा।

मिडास की तरफ देखते हुए सालिनस ने कहा, “बैशस देखो, यह मिडास है इसने न केवल मुझे उन किसानों से बचाया है बल्कि मेरी खूब खातिरदारी भी की है।”

अपने शिक्षक सालिनस से पूरा घटनाक्रम सुनने के बाद बैशस ने मिडास का आभार व्यक्त करते हुए कहा, “मिडास, मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ कि तुमने मेरे संरक्षक और शिक्षक, सालिनस का इतने दिनों तक स्वागत सत्कार किया। मैं तुम्हारे इस काम से बेहद खुश हूँ इसलिए तुम मुझसे जो भी चाहो वरदान मांग लो।”

“क्या आप वाकई मुझे वरदान में वह देंगे जो मैं चाहता हूँ।” मिडास ने कहा।

“मिडास, तुम्हारी जो भी इच्छा हो वह तुम मुझसे निस्संकोच होकर कहो। मैं तुम्हारी इच्छा जरूर पूरी करूंगा।“

बैशस की बात सुनकर मिडास ने एक पल के लिए भी विचार न किया और बोला, “मुझे सोना चाहिए, बहुत सारा सोना। मैं चाहता हूँ कि मैं जिस भी चीज को स्पर्श करूं, चाहे वह कितनी भी साधारण और बेमूल्य क्यों न हो, वह चीज सोने में बदल जाए।”

मिडास की बात सुनकर बैशस के दिमाग में देवताओं की सभा में कही गयी ज्यूस की वह बात गूँज उठी जिसमें उन्होंने कहा था, “देखो, पिछले पांच दशकों से यह मिडास, फ्रिजिया का राजा बना बैठा है, और जब से यह राजा बना है तब से इसने सोना इकट्ठा करने के सिवाय और कोई दूसरा काम नहीं किया है। यह अपने बचपन के गरीबी के उन दिनों को भूल ही गया है जब इसे दो जून की रोटी भी नसीब नहीं होती थी। अरे, सोने को इकट्ठा करने के इसके पागलपन से तो अब जनता भी त्राहि-त्राहि करने लगी है। यहाँ पर किसानों के लड़के न जाने कितने ही ऐसे दिन बिताते हैं जब चट्टानी फ्रिजिया की ऊंची जमीनों पर दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद भी वे भूखे पेट ही अपने बिस्तरों पर सोने के लिए मजबूर होते हैं।”

“क्या सोचने लगे?” सालिनस ने बैशस के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

बैशस ने सालिनस की तरफ अपनी नजरें घुमायी, जो इस समय उसे देखकर मुसकुरा रहे थे। सालिनस को इस प्रकार मुसकुराता हुआ देखकर बैशस समझ गये कि वह मिडास के यहाँ किस मकसद से आये थे।

मुसकुराकर बैशस ने मिडास से कहा,“मिडास, एक बार फिर सोच लो वरदान में तुम क्या मांग रहे हो?”

“मैं अच्छी तरह से जानता हूँ कि मैं आपसे क्या वरदान मांग रहा हूँ। मैं आपसे सिर्फ यही वरदान चाहता हूँ इसके अलावा मैं आपसे कोई दूसरा वरदान नहीं चाहता हूँ।” दृढ़ता के साथ मिडास ने कहा।

“बैशस, मिडास को तुम वह वरदान दे दो जो वह चाहता है।” सालिनस ने मिडास का पक्ष लेते हुए कहा।

जैसा कि एक यूनानी कहावत है :

"Όντες θέλει να χαλάσει ο θεός το μέρμυγκα, του βάνει φτερά και πετάει." (ओंतेस फेलिआइ ना खेलासीआइ वो फेओस तुआय मरम्युग्या, तव्यु ब्यावांई फिस्तेरोआई के पिरत्याई) अर्थात—जब ऊपरवाला चींटी को मसलना चाहता है तो वह इसे पर दे देता है और यह अपने पतन के लिए उड़ने लगती है।

बैशस ने मिडास के उत्सुक चेहरे पर नजर डाली, और उसे वरदान देते हुए बोले: “वैसा ही होगा जैसा तुम चाहते हो। मैं तुम्हें सुनहरे स्पर्श की शक्ति देता हूँ। तुम जिस भी चीज, चाहे वह सजीव हो या निर्जीव हो, को छूओगे वह तुरंत सोने में तबदील हो जायेगी।”



मिडास को वरदान देने के बाद सालिनस और बैशस वहां से चले गये, और उनके जाते ही मिडास ने खुद से बुदबुदाते हुए कहा, “बैशस ने जो वरदान मुझे दिया है क्या वह वास्तव में सच

है, क्या वाकई ऐसा संभव है कि मैं जिस भी चीज को स्पर्श करूंगा वह सोने में तबदील हो जायेगी। मुझे वरदान की सत्यता की जांच करनी चाहिए।"

वह जहां पर खड़ा था उसके निकट ही जैतून का एक पेड़ था, इस पेड़ की नीचे लटकी हुयी एक टहनी, जिस पर सबसे मुलायम स्लेटी-भूरी पत्तियां उगी थीं, को तोड़ते हुए उसने स्पर्श किया और उसके देखते ही देखते वह टहनी स्लेटी-भूरी पत्तियों सहित, सोने की चमकदार वज़नी पत्तियों से युक्त एक सोने की टहनी में तबदील हो गयी, इसके बाद वह नीचे झुका और उसने जमीन पर उगी घास और इसके समीप उगे महकदार बैंगनी फूलों को स्पर्श किया और एक बार फिर से वह पूरी घास सोने की एक परत में बदल गयीं, और वे बैंगनी फूल अब अपनी महक खो चुके थे और सोने के सख्त निर्जीव फूलों में बदल गये थे। फिर उसने एक तरोताजा सेब की तरफ नजर डाली जो सूरज की रोशनी में गुलाबी आभा लिए हुए दमक रहा था, और फिर जैसे ही मिडास ने इसे छूकर स्पर्श किया तो वह सेब सोने के एक सुनहरे सेब में तबदील हो गया मानों वह हेस्पेराइड्स[11] के बगीचे में उगा हुआ सोने का

---

[11] हेस्पेराइड्स (Ἑσπερίδες)—यूनानी मान्यताओं में अप्सराओं को हेस्पेराइड्स कहा जाता है। इनका काम दुनिया के दूरस्थ पश्चिमी कोने में स्थित परमानन्द देने वाले बगीचे की देखभाल करना है। माना जाता है कि यह बग़ीचा लीबिया में स्थित सिरिनी के निकट है।

फल था। इसके बाद अपने महल के अंदर दाखिल होते हुए उसने पत्थर के बने स्तम्भों को हल्के से स्पर्श किया, वे स्तम्भ सूर्यास्त के आकाश में सोने के चमचमाते स्तम्भों में बदल गये। इन सभी चीजों को सोने में तबदील हुआ देखकर उसने बुदबुदाते हुए कहा, "बैशस ने मुझसे धोखा नहीं किया था, उन्होंने मुझे मेरा मनवांछित वरदान दिया। अब मेरे पास सुनहरे स्पर्श की शक्ति है। मेरे पास अब सोना ही सोना है।" ख़ुशी-ख़ुशी लम्बे डग भरता हुआ वह अपने महल के अंदर दाखिल हुआ और फिर उसने अपने सभी मंत्रियों और दास-दासियों को अपने कक्ष में बुलाया और चहकते हुए बोला, "जानते हो, बैशस ने मुझे वरदान दिया है कि मैं जिस भी चीज को स्पर्श करूंगा वह सोने में तबदील हो जायेगी।"

"क्या सच में महाराज?" कक्ष में मौजूद सभी लोगों ने, आश्चर्य प्रकट करते हुए, एक स्वर में मिडास से पूछा।

"हाँ यह सच है, देखो मैंने अपने स्पर्श से जैतून की इन पत्तियों और इसकी टहनी को सोने में बदल दिया है," अपने हाथ में पकड़ी सोने की पत्तियों से युक्त सोने की टहनी को दिखाते हुए उसने कहा, "और उधर महल के उन स्तम्भों को देखो जिन्हें मैंने अपने स्पर्श से सोने का बना दिया है।"

"वाकई महाराज यह तो कमाल है, लेकिन हम चाहेंगे कि आप अपने इस सुनहरे स्पर्श का नमूना हमें भी दिखाएँ।"

“ठीक है, हम तुम्हें इस बात का नमूना दिखायेंगे लेकिन इस बार हम किसी निर्जीव चीज को नहीं बल्कि किसी जिन्दा चीज को सोने में बदलेंगे” यह कहते हुए मिडास ने, अचानक ही, अपने पास खड़ी दासी को अपने हाथ से स्पर्श किया और इस स्पर्श मात्र से ही वह दासी तुरंत सोने की एक मूर्ति में बदल गयी।

मिडास के स्पर्श के इस चमत्कार को देखकर उसके आस-पास मौजूद सभी लोग भयभीत हो गये और उससे पीछे हट गये, लेकिन किसी ने भी अपने भय को मिडास के सामने जाहिर नहीं किया। और उसकी तारीफ़ करते हुए बोले, “वाकई, महाराज आपके पास बहुत ही अद्भुत शक्ति है, अब आप जितना चाहें उतना सोना इकट्ठा कर सकते हैं।”

यह सुनकर मिडास बहुत खुश हुआ और उसने बेहतरीन भोज के तैयार किये जाने का आदेश दिया—एक ऐसा भोज जो ऐसे भव्य अवसर के माकूल था।

इसके बाद सभी लोग मिडास के कक्ष से बाहर चले गये।

भोजन के तैयार होने के बाद, एक दासी ने मिडास से कुछ दूरी पर खड़े होते हुए उसे सूचित किया, “महाराज, भोजन तैयार है। कृपया चलें और उसे ग्रहण करें।”

“ठीक है, तुम चलो हम आते हैं।” मिडास ने लापरवाही से कहा।

किसी भी चीज को अपने स्पर्श से सोने का बना देने की क्षमता के अहसास की ख़ुशी के साथ मिडास भोजन कक्ष में पहुंचा।

लेकिन जब मिडास ने, वैसी ही क्षुधा के साथ जो एक भूखे किसान में होती है, अपने सामने शेर की टांगों की आकृति वाली एक विशाल मेज पर सज़ाकर रखे गये स्वादिष्ट और सुरुचिकर पकवानों, जिसे उसके रसोइये ने ख़ास तौर पर तैयार किया था, को खाने के लिए अपने हाथ को आगे बढ़ाया और जैसे ही उसने उसे स्पर्श किया वह पकवान सोने की थाल में रखा सख्त सोने का पकवान बन गया, यह देखकर कि उसके स्पर्श से पकवान सोने में बदल गया था मिडास ने कुछ पलों के लिए विचार किया और फिर उसने पके हुए टेग्नाइट्स[12] को अपने मुंह से उठाने की सोची परन्तु जैसे ही उसने उसे अपने मुंह से स्पर्श किया वह सोने के सख्त टेग्नाइट्स में तबदील हो गया, इसकी सुगंध इसका जायका सब कुछ जा चुका था, जिसे खाया नहीं जा सकता था। मिडास भयभीत हो गया और उसने अपने नौकर को बुलाते हुए कहा कि वह उसे अपने हाथों से खाना खिलाये और इस बात का ध्यान रखे कि खाना सीधे उसके मुंह के अंदर जाए न कि उसके मुंह और दाँत को स्पर्श करे। नौकर ने इस डर से कि कहीं मिडास के स्पर्श से वह भी सोने का न बन जाए मिडास के मुंह में निवाला

[12] टेग्नाइट्स(τηγανίτης)—चपटी हुयी चपाती जिसे आटे, जैतून के तेल, शहद और दही मिलाकर तैयार किया जाता है।

डालते समय इस बात की पूरी सावधानी बरती कि उसका स्पर्श मिडास से न होने पाए और फिर उसने खाने के निवाले को मिडास के मुंह में डाल दिया लेकिन मुंह के अंदर जाते ही वह निवाला सोने के निवाले में तबदील हो गया, मजबूरन उस निवाले को मिडास को अपने मुंह से वापस बाहर निकालना पड़ा। फिर मिडास ने अपने पसंदीदा फेटा[13] को खाने की जैसे ही कोशिश की वह भी सोने के सख्त फेटा में तबदील हो गया। अपने सामने परोसे गये हर पकवान को मिडास ने खाने की कोशिश की लेकिन वह नाकाम रहा और परोसा गया पूरा का पूरा भोजन सोने के भोजन में तबदील हो गया। इस तरह से चकराया और दुःखी मिडास, अपने शराबखाने में गया और उदास मन से एक कुर्सी पर बैठते हुए उसने एक दासी को लाल शराब का एक प्याला उसके लिए लाने का आदेश दिया। फिर जैसे ही उसने शराब के जाम को पीने के लिए प्याले को अपने हाथ में लिया, लाल शराब से भरा वह प्याला और उसमें भरी वह लाल शराब सोने में तबदील हो गयी; झुंझलाकर उसने सोने में तबदील हो चुके प्याले को उसकी सोने में तबदील हो चुकी शराब के साथ जमीन पर पटक दिया और अपने बागीचे में लगे फव्वारे से पानी पीने के लिये गया किन्तु फव्वारे से निकलने वाली पानी की बूंदों ने जैसे ही उसके शरीर और उसके सूखे होंठों को स्पर्श किया वे बूंदें सोने

[13] फेटा(φέτα)—सफेद नमकीन पनीर जिसे दही से बनाया गया हो।

की बूंदों में तबदील हो गयीं हालत यह थी कि अब वह मिडास अपनी प्यास तक नहीं बुझा सकता था। दो दिनों के भीतर ही मिडास, सोने को इकट्ठा करने की अपनी हवस से पैदा हुयी इस मुसीबत से, बुरी तरह से त्रस्त हो गया। और निराश होकर उसने खुद को सबसे अलग करते हुए अपने कमरे में कैद कर लिया और लोगों से मिलना-जुलना छोड़ दिया।

मिडास की बेटी जोई ने जब अपने पिता की हालत के बारे में सुना तो वह अपने ननिहाल से वापस लौट आई, और महल में आते ही उसने कहा, "हम अभी अपने पिता महाराज से मिलना चाहते हैं।"

राजकुमारी जोई की बात सुनकर उसकी अगवानी करने के लिए महल के द्वार पर खड़े दास-दासियों और मंत्रियों ने उसे रोकते हुए कहा, "राजकुमारी, हमारी सलाह है कि आप महाराज मिडास से मिलने के लिए उनके कक्ष में न जाएँ, कहीं गलती से आपने उन्हें या उन्होंने आपको स्पर्श कर लिया तो बहुत संभव है कि आप भी उस दासी की तरह ही सोने की प्रतिमा न बन जाएँ जिसे महाराज मिडास ने स्पर्श कर सोने का बना दिया था। भलाई इसी में है कि आप उनके करीब न जाएँ।"

यह सुनकर राजकुमारी भावावेग में आते हुए बोली, "ऐसी बात कहते हुए आप लोगों को शर्म आनी चाहिए, महाराज बहुत ही

बुरे दौर से गुजर रहे हैं, इस समय उन्हें हम लोगों की सख्त जरूरत है और आप कह रहे हैं कि मैं उनसे मिलने न जाऊं!"

इतना कहकर राजकुमारी ने समीप खड़े दास-दासियों को धक्का देते हुए अपना रास्ता साफ़ किया और मिडास के कक्ष की तरफ चल पड़ी। मिडास के कमरे के बाहर कोई भी सेवक या सेविका मौजूद नहीं था, राजकुमारी ने मिडास के कमरे के दरवाजे को धीरे से धक्का देकर खोला।

"कौन है?" बहुत ही उदास और दबी हुयी आवाज में मिडास ने, अपने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही, कहा।

"मैं हूँ पिता जी, आपकी प्यारी बेटी जोई!" जोई ने मिडास के बिस्तर के करीब आते हुए कहा।

"चली जाओ, जोई! तुम यहाँ से चली जाओ। मेरे करीब मत आओ, देखो इस कमरे की जिन-जिन चीजों को मैंने स्पर्श किया है वे सब की सब सोने में बदल गयीं हैं।" मिडास ने अपने हाथ को, कमरे में मौजूद चीजों की तरफ, घुमाकर इशारा करते हुए कहा।

मिडास की चेतावनी के बावजूद राजकुमारी जोई ने मिडास के कमरे में मौजूद सोने की चीजों को देखने की बजाय सिर्फ यह गौर किया कि उसके पिता अपने सोने के बिस्तर पर भूख-प्यास से बेहाल होकर पड़े थे। अपने पिता की यह हालत देखकर जोई से

रहा न गया और वह मिडास को ढाढ़स बंधाने के लिए उसके करीब आयी। किन्तु जैसे ही उसने मिडास को स्पर्श किया वह भी सोने में तबदील हो गयी।



सोने की मूर्ति बनी जोई को अपनी गोद में लेकर मिडास चिल्लाने लगा, “हा, बेटी यह क्या हो गया? तुम भी मुझे छोड़ कर चली गयी!” और फिर वह फफक-फफक कर रोने लगा।

अपनी बेटी की इस दुःखद मौत से मिडास टूट गया। मिडास को अहसास हो गया कि इस दुनिया में उसके लिए कुछ भी नहीं बचा था, अब वह न ही कुछ खा सकता था, न ही पी सकता था और न ही किसी चीज को स्पर्श कर उसके वास्तविक अहसास को महसूस कर सकता था, सारे रिश्ते-नाते और संबंधी सब कुछ उसके लिए खत्म हो चुके थे दुनिया की हर एक चीज अब उसके लिए सिर्फ निर्जीव सोना ही थी। वह सोना, जिससे वह कुछ भी खरीद सकता था और जिसके दम पर वह लोगों को अपने काबू में रख सकता था, अपना दबदबा बनाए रख सकता था, आज उसके लिए दुनिया की सबसे बेकार चीज थी। जिस सोने को जमा करने की अपनी हवस के चलते जिन्दगी भर उसने प्राकृतिक संसाधनों, पेड़-पौधों, नदी-तालाबों, खेतों, मैदानों, चरागाहों का बुरी तरह से नाश किया था, अपनी जनता पर जबरन अत्याचार किये थे, लूटपाट की थी, नये-नये कर लगाये थे, आज वही सोना उसके लिए मुसीबत बन गया था। यह सारा सोना अब उसके किसी काम का नहीं था यह उसे न ही भरपेट भोजन दे सकता था और न ही प्यास बुझाने के लिए पानी दे सकता था। मिडास को

अहसास हो गया था इस सोने से न ही वह अपने लिए जिन्दगी, न ही स्वास्थ्य और न ही खुशियां खरीद सकता था।

राजकुमारी जोई के सोने में बदलने की खबर जंगल की आग की तरह मिडास के पूरे राज्य में फ़ैल गयी, लोगों ने, इस डर से कि कहीं वे भी सोने के न बन जाएँ, उसके महल की तरफ जाना छोड़ दिया। इस प्रकार लोगों द्वारा उपेक्षित दुःखी मिडास अपने वीरान महल में भूखा-प्यासा, थका हारा अकेला बैठा रोता-चिल्लाता रहता और देवता बैशस को आवाज देकर बुलाने की कोशिश करता और फिर उस वरदान, जिसे बैशस ने उसे दिया था, से नफरत करते हुए चिल्लाते हुए कहता, "मुझे बचाओ, ओ बैशस मुझे बचाओ! मैं एक मूर्ख हूँ, सोना इकट्ठा करने की हवस ने मुझे अंधा कर दिया था, मेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी, मुझे भ्रष्ट बना दिया था। ओ बैशस, मेरी गलतियों, मेरे पापों और मेरे द्वारा मेरी जनता पर किये गये मेरे अत्याचारों के लिए मुझे माफ कर दो। मुझ पर रहम करो, सुनहरे स्पर्श के इस शापित वरदान को मुझसे वापस ले लो।"

लेकिन उसकी इन चीखों और मिन्नतों का कोई असर नहीं हुआ और वह मिडास यूं ही रोते-चिल्लाते हुए, भूख प्यास से तड़पकर एक दिन मर गया।[14]

~समाप्त~

अगर आपको हमारी यह किताब पसंद आई तो हमसे संपर्क बनाने के लिए हमारे ऑफिशियल फेसबुक पेज को लाइक करें: https://www.facebook.com/worldclassicsinhindi/

---

[14] बैशस ने मिडास को सुनहरे स्पर्श की शक्ति दी हो या न दी हो परन्तु स्पष्ट रूप से मिडास की यह कहानी यह सुझाती है कि सोने को इकट्ठा करने की अपनी हवस में मिडास, अपनी जनता से बहुत ही ज्यादा टैक्स वसूला करता था। जिसका परिणाम यह हुआ कि बढ़े हुए टैक्स को चुकाने के लिए सीमित संसाधनों वाली जनता को न चाहते हुए भी भ्रष्ट आचरण और मिलावट जैसे अपराधों को करने के लिए विवश होना पड़ा और अंततः यह भ्रष्टाचार और मिलावट इस हद तक बढ़ गया कि खाने-पीने की चीजें और पानी तक इससे अछूते न रहे, और वे खाने और पीने लायक नहीं रह गये। आखिर में मिडास का परिवार और वह खुद भी भ्रष्टाचार और मिलावट के प्रभाव से बच न सका और मारा गया।